बेबस हुए दरख्त

बंद हुई है पंछियों का चहकना
टहनियाँ हो गई हैं, अब वीरान
ये मंजर भी मायूस लग रही है
तपने लगा है अब सारा जहान।

हर कोई तलाश रहा यहाँ शुकुन
और तालाश रहे हैं प्यारी छाया
यह कैसे मिले? भला!क्यों मिले?
बेबस दरख्तों को हरदम सताया।

निरीह प्राणी, के लिए श्राप बना
इंसानों की यह, घोर लापरवाही
यह क्यों?इतना खुदगरज बना है
ला रही वसुंधरा में, सदा तबाही।

पंछी बूँद-बूँद के लिए भटक रहीं
पर कोई नही कर रहा है परवाह
अरे इंसान!तुझे तो बूँद मयस्सर है
पर!इनके लिए, न बन लापरवाह।

अशोक पटेल "आशु"